ISSN: 2454-5503
VOL. 7 | ISSUE 1 | FEBRUARY 2021
IMPACT FACTOR : 4.197 (IIJIF)

# CHRONICLE OF HUMANITIES AND CULTURAL STUDIES

A Peer Reviewed Bimonthly International Journal

*Special Issue on*

## GENDER EQUITY IN HIGHER EDUCATION

(Book III)

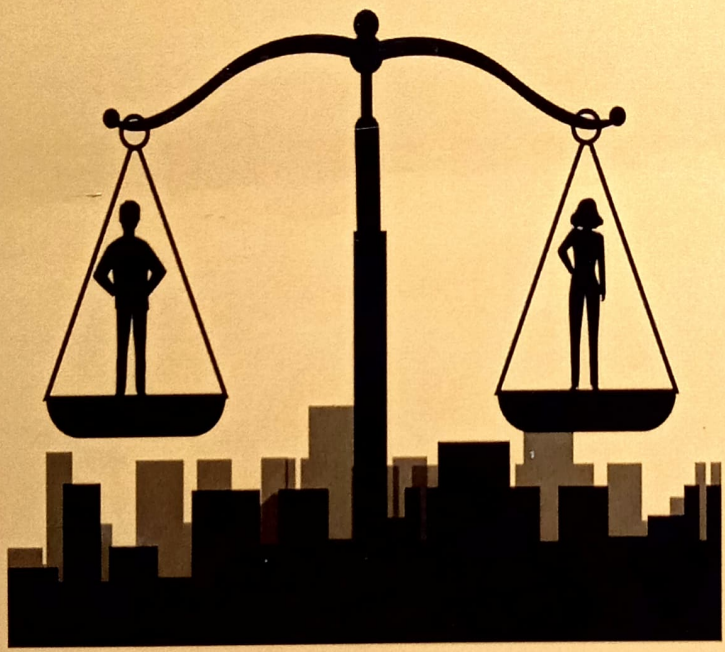

***Chief Editor***

**Dr. R. S. Funne**

*(Principal)*

***Issue Editors***

**Dr.J.M.Bochare | Dr.M.U.Khedekar**

२९. महिला सबलीकरण काळाची गरज
**डॉ.विजया साखरे | १५४**
३०. महात्मा ज्योतिराव फुले व महिला सबलीकरण एक चिकित्सा
**प्रा. सच्चिदानंद फुलचंद खडके | १६२**
३१. राजकारणातील महिलांचा दर्जा
**शेख कादर समंदर | १६५**
३२. राजकारणातील महिलांचे स्थान
**डॉ.पी.एस.लोखंडे | १७२**
३३. राजकीय क्षेत्रात महिलांचे योगदान
**डॉ.बोचरे जे.एम./ डॉ.काशिनाथ पल्लेवाड | १७५**
३४. स्त्री मुक्ती चळवळ आणि भारतीय स्त्री
**डॉ. काळे बी. एम | १७८**
३५. स्त्री सक्षमीकरण आणि मराठी स्त्रीवादी कथालेखन
**संजय तुकाराम निचिते | १८३**
३६. २० व्या शतकातील महिलांचे हक्क आणि सबलीकरण
**सुनिल सुधाकरराव सुर्यवंशी | डॉ. शिला स्वामी | १९१**
३७. उषा प्रियंवदा के साहित्य में नारी जीवन की समस्याएँ
**डॉ. खेडेकर मारोती उत्तमराव | १९५**
३८. हिंदी महिला उपन्यासकार के साहित्य में नारी
**प्रा. ठाकुर एस.पी. | २०२**
३९. महिला सशक्तिकरण और सामाजिक संस्कृति
**डॉ कुलकर्णी वनिता बाबूराव | २०६**
४०. मृदुला गर्ग की स्वयंनिर्णयी नारी : बदलते परिवेश का बोध
**डॉ. राजश्री भामरे | २११**
४१. डॉ. कुँअर बेचैन की गजलों में नारी विषयक संवेदनाएँ
४२. **डॉ. बंग नरसिंगदास ओमप्रकाश | २१७**
४३. हिंदी कहानियों में कामकाजी महिलाओं की समस्याएं एक दृष्टिक्षेप
**डॉ. डमरे मोहन मुंजाभाऊ | २२२**

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

39

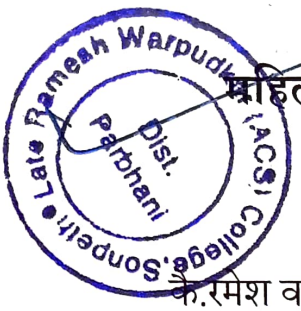

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth, Dist. Parbhani

# महिला सशक्तिकरण और सामाजिक संस्कृति

**डॉ कुलकर्णी वनिता बाबूराव**
हिंदी विभागाध्यक्षा
कै.रमेश वरपुड़कर महाविद्यालय, सोनपेठ. ता.सोनपेठ जि. परभणी

**प्रस्तावना -** सशक्तिकरण का तात्पर्य है शक्तिशाली बनाना। महिला सशक्तिकरण के अंतर्गत महिलाओं से जुड़े सामाजिक आर्थिक राजनीतिक और कानूनी मुद्दों पर संवेदनशीलता और सरोकार व्यक्त किया जाता है। समय बदल गया है परिस्थितियां बदल चुकी है , पढ़ी-लिखी महिलाएं अब विचारों की दृष्टि से सामर्थ्य वान होने लगी है ।आज महिलाओं की प्राथमिकताओं में बदलाव आया है अब वे उन पेशों और कार्यक्षेत्रों में भी नजर आ रही है ,जिनमें पहले सिर्फ पुरुषों का ही दखल था। खेलकूद ,शिक्षा ,चिकित्सा ,समाज सेवा ,परिवहन पुरातत्व, वित्त -वाणिज्य , प्रशासन सेना कला -साहित्य संस्कृति आदि हर क्षेत्र में आज महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है ।आज की नारी आज की नारी परंपरागत मूल्यों की अपेक्षा नए सामाजिक मूल्यों को स्वीकार कर रही है ।अपने उद्देश्य पूर्ति के लिए विद्रोह करने की क्षमता उसमें आ गई है ।धर्म, परंपरा आदि की मर्यादाओं को पीछे छोड़ वह अपना रास्ता स्वंय चुन कर उस पर आगे बढ़ रही है ।आज नारी स्वतंत्रता ने उसके लिए प्रगति के अनेक रास्ते खोल दिए हैं।

**महिला सशक्तिकरण की अवधारणा -** नारी का सशक्तिकरण एक सर्वांगीण बहुआयामी दृष्टिकौन है ।यह राष्ट्र निर्माण की मुख्यधारा में महिलाओं की पर्याप्त व सक्रिय भागीदारी में विश्वास रखता है ।एक राष्ट्र का सर्वांगीण विकास तभी संभव है जब महिलाओं को समाज में उनका यथोचित स्थान व पद दिया जाए ।उन्हें पुरुषों के साथ-साथ विकास की सहसभागीकी माना जाए ।सशक्तिकरण के अंतर्गत महिलाएं अपने आर्थिक स्वावलंबन राजनीतिक भागीदारी व सामाजिक विकास के लिए आवश्यक विभिन्न कारकों पर पहुंच नियंत्रण प्राप्त करती है। अपनी शक्तियों व क्षमताओं व योग्यताओं तथा अधिकारों व जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक होती है

**सशक्तिकरण का अर्थ -** महिला सशक्तिकरण अर्थात महिलाओं को शक्तिशाली बनाना सशक्तिकरण शब्द का विच्छेद है स+ शक्ति + करण। जिसमे 'स' उपसर्ग है

।शक्ति संज्ञा है। विशेषण तथा करण प्रत्यय से मिलकर शब्द बना है -सशक्तिकरण ।इसका ध्वनि अर्थ है -शक्ति सहित गत्यात्मकता सशक्तिकरण एक विकासात्मक प्रक्रिया है एक पूर्ण सशक्त व्यक्ति वह है जो अपने जीवन से संबंधित निर्णय लेने में पूरी तरह स्वतंत्र होता है। स्त्रियों के संदर्भ में सशक्तिकरण की अवधारणा अत्यधिक महत्वपूर्ण है।नारी समाज की प्रगति को आगे बढ़ाने में सहायक रही है। समाज का विकास तभी संभव है जब पुरुष और नारी दोनों का सामान विकास हो।आज वर्तमान में स्त्री ने शास्त्र का रूप धारण कर लिया है। इस शास्त्र ने स्त्री के जीवन के लगभग हर क्षेत्र को विश्लेषिण करने का प्रयत्न किया है।आज नारियां परंपरागत रूढी तथा परंपराओं को तोड़कर अपने लज्जा ग्लानि सत्ता के विरोध में अपना अस्तित्व निर्माण कर रही है।

**सशक्तिकरण और सामाजिक संस्कृति -** "भारत विश्व में महान संस्कृति वाले देश के रूप में अपनी पहचान बना चुका है।लेकिन कथनी और करनी में अंतर -सा दिखता है।सिमटतेसी विश्व में विदेशी कल्चर , औरत और पुरुष के बीच मिटता फासला दोनों का 24- 24 घंटे साथ रह कर दफ्तर कंपनी फिल्म इंडस्ट्री और सरकार के विभिन्न कार्यालयों में काम करने आदि के कारण बहुत करीब आ गए हैं।तकनीकी शिक्षा के बढ़ते प्रचार प्रसार से यांत्रिक बनता मानव ,मशीन एवं यंत्र की भांति जीवन यापन करने लगा है।"[1] उसके भीतर की भाव- भावनाएं रिश्ते -नाते तथा विधाई सोच नष्ट सी होने लगी है।भारतीय समाज में भले ही नारी ने आदर का स्थान पा लिया हो, लेकिन इस आदर की आड में वह हर समय पुरुष मानसिकता का शिकार मात्र बनकर रह गई है।समय-समय पर पुरुष प्रधान संस्कृति ने उसकी प्रशंसा की आड़ में शोषण ही किया है। नारियों में से जिसने इस शोषण का विरोध किया वह साहित्य के प्रष्ठों में अंकित हुई और जिसने शोषण को सहा वह काल के प्रवाह में लुप्त हो गई।आज आधुनिक युग में शिक्षा तथा कानून के प्रभाव से नारी हर किसी क्षेत्र में पुरुष के कंधे से कंधा लगाकर अपनी कामयाबी दिखा रही है।लेकिन आज भी पुरुषों की मानसिकता में उतना परिवर्तन नहीं आया जितना आना चाहिए। देश की स्वतंत्रता के पश्चात महिलाओं को कई कानूनी अधिकार प्राप्त हुए ,तथापि सामाजिक स्तर पर अभी भी शोचनीय स्थिति बनी हुई है। "2005 में उच्चतम न्यायालय ने अपने आदेश द्वारा परित्यक्ता पत्नी को संपत्ति पर अधिकार जताने का अधिकार प्रदान किया है।"[2] इसीतरह आज पैतृक संपत्ति के अलावा पिता की संपत्ति में भी लड़की का बराबर हिस्सा होने लगा है।इसी प्रकार "शैक्षिक संस्थाओं में भी महिलाओं के लिए आरक्षण के प्रावधान का सही पाया है।"[3]

Ramesh Warpudkar (ACS) College Parbhani



स्त्री जागृति शब्द कानून का सहारा पाकर विस्तार पा चुका है ।आजकल जागृति उत्थान आदि की बजाय सशक्तता शब्द प्रचलन में है।" नारी सशक्त ता तथा एक आंदोलन का रूप ले चुका है। इसी आंदोलन को गति प्रदान करने के लिए 31 जनवरी 1992 में "राष्ट्रीय महिला आयोग "का गठन किया गया। यह आयोग महिला आयोग अधिनियम 1990 के दायरे में रहकर महिला कल्याण हेतु कार्य करने में तत्पर है ।जम्मू- कश्मीर को छोड़कर संपूर्ण भारत में इसका विस्तार है इसका गठन केंद्रीय सरकार द्वारा किया गया है ।इसमें 5 सदस्य तथा एक अध्यक्ष है। यह आयोग ऐसा निकाम है जो प्रहरी के रूप में काम करता है। यह नारी उत्थान संबंधी मुद्दों पर सरकार को सलाह देता है । इसका कार्य महिलाओं के हितों की रक्षा करना है। इसके अधिनियम द्वारा यह बाध्य किया जाता है कि, "सरकार महिला संबंधित हर मुद्दे को संसद के सामने रखें ।इसके अतिरिक्त महिलाओं के हित में कई गैर सरकारी संस्थाएं काम कर रही है।"[4]

जब तक आज की नारी निष्ठा पूर्वक अपना कर्तव्य निभाते रहेगी पुरुष से अधिक प्रशंसा की अपेक्षा नहीं करेगी ,उसकी क्षमता निपुणता पर कोई प्रश्न नहीं लग सकता, बस आज की नारी को सावधान रहते हुए अपने विवेक और दक्षता का भरपूर उपयोग करना चाहिए ।आदर, सदभावना, प्रेम ,स्नेह यहां सब कुछ एक हाथ पर धरा है, इस संसार में अनेक अनूठी संभावनाएंँ हैं। अपरिमित सीमाएंँ अवसर है। संतुष्ट और प्रसन्न चित्त रहकर अगर नारी को दुगनी मेहनत करनी पड़ी तो आने वाली सदी में भविष्य का भय स्वंय ही भयभीत होकर दबे पांव लौट जाएगा ।सरोज वशिष्ट के अनुसार -

"व्यक्तित्व तेरी उम्मीद नहीं, सिर्फ अपनी पहचान हूं मै,
किसी का अधिकार नहीं ,अपना ही स्वीकार हूं मैं।"[5] इस प्रकार से स्त्री सशक्तिकरण 'स्व' का निर्माण करता है ।शुचिता का नहीं बल्कि अपने सेल्फ के निर्माण और विकास की जरूरत का मुद्दा है। " स्त्रियों को हर मोर्चे पर आर्थिक सामाजिक मानसिक स्तर पर अपनी पहचान बनाने में सक्षम बनाना होगा ,तभी सही मायने में स्त्री मुक्ति होगी नारी को स्वयं भी अपनी योग्यता और समझ की कद्र करनी चाहिए किसी बाहरी शक्ति का मुंह जोड़ने के बजाय अपने आसपास की महिलाओं को संगठित करके इस मुहिम को शक्ति प्रदान करनी होगी।"[6]

स्वाधीनता प्राप्ति के बाद महिलाएं अपनी पूरी शक्ति के साथ प्रगति के दिशा में अग्रसर हुई ।आज नारी का यह मुक्ति संदेश एवं संघर्ष पुरुषों के आताताई पन से मुक्ति है जिसने 21वीं क्षति द्वार पर खड़े होकर नारी की स्थिति को गुलाम बना रखा

है। ममता कालिया का कहना है," मुक्ति एक व्यक्ति से नहीं व्यवस्था से मिलने की बात है।"7

इस प्रकार महिलाओं ने एक तरह की लड़ाई जीत ।ली है। आज शासन, राजनीति ,विज्ञान ,शिक्षा समाज- कल्याण, सांस्कृतिक ट्रेड यूनियनो व्यापार सभी जगह स्त्रियां महत्वपूर्ण और दायित्वपूर्ण पद संभाले हुए हैं ।पर इनकी लड़ाई अभी शेष है ।यह लड़ाई सामाजिक अन्याय दूर करने की ,संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रस्तावों ओर "अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन के नियमानुसार स्त्रियों को सभी क्षेत्रों में समान अधिकार प्राप्त है।"[8]

**सारांश** - दुनिया की आधी आबादी नारियों से सुशोभित वह संपन्न होती है। पर बड़े दुख की विडंबना की बात यह है कि इन पर राज पुरुषों का रहा है ।पुरुष प्रधान संस्कृति की यह सर्वमान्य सम्मानीय विकृत प्रकृति है । इसका विरोध भी होता रहा है ।आज नारी पुरुष सत्तात्मक समाज में व्याप्त विषमता के विरुद्ध विद्रोह करते हुए अपना अस्तित्व निर्माण कर रही है ।आज नारी अपने अपदस्थ मुकाम को प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील दिखलाई पड़ती है ।भारतीय संस्कृति धर्म एवं सभ्यता के निर्माण में श्री ने विशेष योगदान दिया है ।आदिम युग से ही स्त्री पुरुष की प्रेरणा एवं संघर्ष की सहगामिनी रही है ।वर्तमान जगत में स्त्रियों के विकास के समग्र अवसर मिलने से उसमें वैचारिक प्रगल्भता निर्माण होती गई। भारतीय तत्वों की मुलभूत रक्षा करने की प्रक्रिया में अपनी निर्णायक भूमिका तक की यात्रा उसने सफल बनाई" महिला सशक्तिकरण महिलाओं को वह मजबूती प्रदान करता है जो उन्हें उनके हक के लिए लड़ने में मदद करता है।इक्कीसवी सदी नारी जीवन में सुखद संभावनाओं की सदी है। महिलाएं अब हर क्षेत्र में आगे आने लगी है ।आज की नारी अब जागृत और सक्रिय हो चुकी है ।नारी अब अपने ऊपर थोपी हुई बेड़ियों एवं कड़ियों को तोड़ने लगेगी तो विश्व की कोई शक्ति उसे नहीं रोक पाएगी वर्तमान में नारी ने रूढ़ीवादी बेड़ियों को तोड़ना शुरू कर दिया है। यह एक सुखद संकेत है। लोगों की सोच बदल रही है ,फिर भी इस दिशा में और भी प्रयास करने की आवश्यकता है।

**संदर्भ** -


१. हाशिए की आवाज़- मासिक पत्रिका -अप्रैल 2015 पृष्ठ 24

२. स्रोत Bharmverchandeldी भारत में महिला सशक्तिकरण दशा और दिशा Journalistdharamveer.blagspot.com./..../bl.

३. सीढ़ी दर सीढ़ी -प्रकाशक कल्याणी शिक्षा परिषद नई दिल्ली -संस्करण- 2010- पृष्ठ 202 203

४. स्त्री मुक्ति संघर्ष और इतिहास- रमणिका गुप्ता - प्रकाशक -सामाजिक प्रकाशन, नई दिल्ली -संस्करण 2014 पृष्ठ 170 104 105 106

५. हंस पत्रिका-मई 2000-राजेंद्र यादव - पृष्ठ 41

६. स्त्री विमर्श: भारतीय परिप्रेक्ष्य -डा.के .एम .मालती - वाणी प्रकाशन नई दिल्ली - संस्करण 2010 -पृष्ठ 74

७. साठोत्तरी हिंदी लेखिकाओं की कहानियों में नारी - डाॅ मंगला कप्पीकेरे- पृष्ठ 80

८. महिला उपन्यास कारों के उपन्यासों में नारीवाद दृष्टि - डॉ अमर ज्योति- पृष्ठ 23 -24

❄❄❄❄

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani